दृष्टि The Vision

सामान्य अध्ययन

drishti

निर्धारित समय: 1 घंटा 30 मिनट
Time allowed: 1 Hour 30 Minutes

अधिकतम अंक: 125
Maximum Marks: 125

Name: Amit kumar yadav **Mobile Number:** ____________

Medium (English/Hindi): ____________ **Email:** ____________

Center & Date: ____________ **UPSC Roll No.:** ____________

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

उत्तर-पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

All the questions are compulsory.

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Answer Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Answer Booklet must be clearly struck off.

केवल मूल्यांकनकर्त्ता द्वारा भरा जाए *(To be filled by Evaluator only)*

Question Number	Marks
1.	
2.	
3.	
4.	
5.	
6.	
7.	
8.	
9.	
10.	
Grand Total (सकल योग)	

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

1. ② "संतोष एक प्राकृतिक संपदा है, जबकि विलासिता एक कृत्रिम निर्धनता।"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

कपिलवस्तु के राजा शुद्धोधन के पुत्र के जन्म के अवसर पर किसी संत ने यह भविष्यवाणी कर दी कि यह बालक या तो महान राजा बनेगा या महान संत। यह जानकर शुद्धोधन ने अपने पुत्र सिद्धार्थ के लिए मानव जीवन की सारी विलासिता की वस्तुएं प्रदान की ताकि वह इन कृत्रिम विलासिता की वस्तुओं के माया-जाल में फंसकर संत न बने व महल में ही रहकर राजा बने। किंतु आगे चलकर इन विलासिता की वस्तुओं से सिद्धार्थ का मन ऊबने लगा, उन्होंने जब नगर में घूमने की इच्छा जताई तो सारे नगर को सजा दिया गया। किसी गरीब, दुखी बीमार को सड़क पर आने की अनुमति नहीं दी गई, फिर भी घूमते हुए सिद्धार्थ ने जब वृद्ध, बीमार, मृत व्यक्ति को देखा तो बेचैन हो गए। उन्होंने अपने सारथी से इस संदर्भ में सवाल भी किए, आगे चलकर एक मुस्कुराते संत को देखकर वह आश्चर्यचकित हो गए कि जब उसके पास कुछ नहीं है तो वह मुस्कुरा

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

कैसे सकता है।

उपरोक्त प्रकरण से सिद्धार्थ ने जीवन में कृत्रिमता को छोड़कर वास्तविक जीवन के उद्देश्यों के खोज में घर-बार, महल की शानो-शौकत को छोड़कर, और इसी क्रम में घूमते घूमते उन्होंने बोधगया में पुनपुन नदी के तट पर ज्ञान की प्राप्ति की और वे व महात्मा बुद्ध कहलाए। इसी ज्ञान प्राप्ति के पश्चात उन्होंने मध्यम मार्ग प्रतिपदा, अष्टांगिक मार्ग आदि को प्रसारित किया, वस्तुतः उन्होंने कहा कि संपूर्ण संसार दुःखमय है और इस दुख का कारण तृष्णा है। तृष्णा से तात्पर्य अतिशय भौतिक विलासिता की प्राप्ति पर बल देना, इन्ही तृष्णाओं पर विजय मनुष्य संतोष के मूल्य से ही प्राप्त कर सकता है।

वस्तुतः संतोष व्यक्ति के जीवन में निजी स्तर पर एक संतुलित विकास का आधार है, यह व्यक्ति को उतने ही विलासिता या भौतिक उपभोग की वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है जो उसके मानवीय विकास के लिए आवश्यक है इसके माध्यम से व्यक्ति अपने निजी संबंधों में सौहार्द्र को बनाए रखता है, आपसी रिश्ते में तनाव कम होता है। इसी

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

तरह मानव को स्वास्थ्य संबंधी हाइपरटेंशन, माइग्रेन आदि बीमारियों से भी बचाव का रास्ता संतोष से होकर गुजरता है।

इसी तरह समाज में संतोष का मूल्य एक शांतिपूर्ण सामाजिक वातावरण का आधार है, यह समाज में मानवीय मूल्यों के विकास को बढ़ावा देकर समाज में कृत्रिम संबंधों के नकारात्मक प्रभावों को कम करता है। यही कारण है कि यदि हम भूटान या जैसे देश को देखें जहाँ भौतिकता पर कम बल दिया जाता है वह हैप्पीनेस इंडेक्स में उच्च स्थान पर है, जबकि पश्चिमी विकसित देशों में अवसाद, निजी संबंधों में कृत्रिमता, बनावटी जीवन को बढ़ावा मिला है, संतोष ही समाज में जियो और जीने दो की अवधारणा को बढ़ावा देता है, अशोक ने भी अपनी धम्म नीति के तहत इन्ही संतोष से जुड़े मूल्यों को बढ़ावा देकर एक स्वस्थ सामाजिक वातावरण के निर्माण का प्रयास किया।

अब हम यदि राजनीतिक संबंधों की बात करे तो संतोष सीमाविवाद, तीव्र शस्त्रीकरण को कम कर शांतिपूर्ण सह अस्तित्व की नीति को बढ़ावा

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

2. देता है, यही नीति एक स्वस्थ समावेशी विश्व व्यवस्था का आधार होता है भारत की आक्रमण, दूसरे देश के आंतरिक मामलों में अहस्तक्षेप की नीति भारतीय संस्कृति के संतोषम् परम् सुखम् की नीति को चरितार्थ करता है।

इसी तरह पर्यावरण संरक्षण के लिए मानव को संतोष के मूल्य पर ही बल देना होगा, यही कारण है कि गांधी को डीप इकोलॉजी के प्रतिपादक अर्नेस्ट नेस ने पर्यावरण संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण माना।

"पर्यावरण हमारी आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है,
हमारे लालच को नहीं,"

गांधी का उपरोक्त कथन मानव को भौतिक विकास के क्रम में संतुलित विकास को अपनाने के लिए प्रेरित करता है जिसके अभाव मे ग्रीन हाउस गैसों के अतिशय उत्सर्जन ने ग्लेशियर को पिघलाने व जलवायु परिवर्तन को बढ़ावा देने वाली प्रवृत्तियों को मजबूत किया है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

इसी तरह यदि हम इतिहास मे देखे तो भौतिकता पर बल देने से अनेक विध्वंसकारी उदाहरण विद्यमान रहे है। कौरवों का समूल नाश संतोष के अभाव मे ही हुआ, जहाँ उन्होने पाण्डवों को एक सुई की नोक के बराबर भी भूमि देने से मना कर दिया, सिकंदर का विजय अभियान उसकी महात्वाकांक्षा का आधार तो है किंतु यही युद्ध अभियान उसकी मृत्यु का कारण भी बना, वह एक युद्ध विजेता तो बना किंतु उसने कोई सुदृढ़ मानवीय सुधारों पर कोई ध्यान नही दिया।

जबकि अशोक ने कलिंग विजय के उपरांत धम्म नीति अपनाकर अपने पड़ोसी देशों से शांतिपूर्ण सहयोग की नीति अपनाकर न केवल तत्कालीन समाज को प्रगतिशीलता के आदर्श सीखाए अपितु वह आज की कल्याणकारी राज्य की अवधारणा का प्रेरक बना हुआ है।

अब यदि हम विलासिता के संबंध मे बात करे तो इसकी कोई अंतिम सीमा नही है, व्यक्ति को एक भौतिक सुख प्राप्त होने के पश्चात नवीन सुख की कामना होती है, यही कामना निरंतर

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

नए सुख को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है। यही कारण है कि एक समय दुनिया के अमीर व्यक्तियों में शुमार स्टीव जॉब्स भी भौतिकता से दूर भारत के संत नीम करोली के पास शांति की तलाश में आए।

"ये न थी हमारी किस्मत कि विसाल-ए-यार होता,
अगर जीते रहते तो यही इन्तज़ार होता।"

वस्तुतः विलासिता समाज में कृत्रिम संबंधों को बढ़ावा देकर एक शोषण के रूप को जन्म देता है जो आगे चलकर दास प्रथा, अस्पृश्यता, आदि अमानवीय मूल्यों को बढ़ावा देता है, इसी का एक चरम रूप हमें औपनिवेशिक शोषण के रूप में भी दिखाई पड़ता है, जो अनेक मानव नरसंहार व विश्वयुद्धों का कारण बना,

अब हम भारतीय समाज व संतोष के संबंधों को समझने का प्रयास करे तो यह हमेशा हमारी संस्कृति का हिस्सा रहा है यह कृत्रिम भौतिकता के स्थान पर मानवीय मूल्यों के प्राप्ति को महत्वपूर्ण माना गया है यहां चार पुरुषार्थ धर्म-काम-अर्थ-

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

3. मोक्ष की अवधारणा में अर्थ को धर्म (नैतिकता) के साथ संतुलित किया गया है, यहां पुरुषार्थ को त्रिऋण (पितृ ऋण, देव ऋण, ऋषि ऋण) की अवधारणा से जोड़कर समाज में संतुलन को बढ़ावा दिया गया है। कबीर ने भी श्रम की महत्ता व संतोष को संतुलित किया है.

"साईं इतना दीजिए जामे कुटुम्ब समाय,
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाए।"

यहां दान को अर्थ के वितरण द्वारा संतुलित कर संतोष के मूल्य को बढ़ावा देने की बात की गई है, जो समाज में संतुलित विकास के लिए महत्वपूर्ण है,

फिर भी कई बार संतोष पर अतिशय बल देने व्यक्ति को अतिशय विकास के प्राप्त करने में बाधा भी बन जाता है, एक व्यक्ति जिसके पास जीवन की मूलभूत आवश्यकता पूर्ति का साधन भी न हो उसे संतोष का मूल्य शोषण को सहने का आधार बन जाता है, एक व्यक्ति के संतोष का मूल्य तभी संतुलित विकास की तरफ ले जा सकता है जब उसके पास मूलभूत आवश्यकता

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

पूर्ति के भौतिक साधन उपलब्ध हों, यही कारण है कि उपनिषदों में कहा गया कि "जो व्यक्ति धन से कमजोर है वह धर्म से भी कमजोर है।"

संतोष और भौतिक विकास में संतुलन के साथ सतत विकास लक्ष्य-2030 के द्वारा संयुक्त राष्ट्र द्वारा भी अपनाया गया है, जो मानवीय वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ भविष्य की पीढ़ी के सशक्त विकास के आधार को मजबूत करता है। संयुक्त राष्ट्र के चार्टर में सभी देशों के सम्मान, अनाक्रमण व सीमा विस्तार पर नियंत्रण की बात संतोष व शांतिपूर्ण अस्तित्व को प्रमाणित करती है।

पेरिस संधि व ग्लासगो समिट के तहत पर्यावरण संरक्षण के संबंध में भारतीय पंचामृत सिद्धांत समावेशी विकास को बढ़ावा देते हैं, जो संतोष के साथ भौतिक विकास की प्रक्रिया को अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

व्यक्ति समाज व राष्ट्र को भौतिक विकास व मानवीय मूल्यों के विकास के बीच संतुलन बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए, एक संतोष की अवधारणा से किया विकास मानव के गरिमापूर्ण जीवन के विकास के साथ स्वस्थ समाज व राष्ट्र का महत्वपूर्ण आधार है। हमने हमेशा से भौतिकता व आध्यात्मिकता के बीच संतुलन को बनाए रखने का प्रयास किया है, वर्तमान दौर की उपभोक्तावादी संस्कृति व गलाकाट प्रतियोगिता के दौर में संतोष का मूल्य ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया है, हमें एक ऐसे विकास का मार्ग अपनाना होगा जहां सभी मानव व जीव जन्तुओं के कल्याण के साथ सशक्त राष्ट्र का निर्माण हो सके।

"सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, सर्वे भवन्तु सुखिनः।
सर्वे सन्तु निरामया, मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।"

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

खण्ड - B

(2) बुद्धिमान व्यक्ति इस या उस समाज का राज्य का नागरिक नहीं बल्कि दुनिया का नागरिक होता है।"

"विचारों के भी पंख होते हैं।"

नेल्सन मण्डेला ने दक्षिण अफ्रीका में रंगभेदी नीति के विरुद्ध संघर्ष किया और उसे समाप्त करने में सफलता पायी। किंतु उन्होंने यह कहा कि वह महात्मा गांधी के विचारों के आधार पर प्रभावित होकर संघर्ष के लिए प्रेरित हुए। इसी तरह डीप इकोलॉजी के प्रतिपादक अर्नेस्ट नेस जी ने भी पर्यावरणीय संकट के समाधान के लिए महात्मा गांधी के विचारों को महत्वपूर्ण माना। कुछ समय पूर्व पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति ने विश्व व्यवस्था को शांतिपूर्ण व प्रगतिशील बनाए रखने में गांधीजी को महत्वपूर्ण माना, इन उदाहरणों से गांधी जी के विचारों का वैश्वीकृत प्रभाव दिखाई पड़ता है।

जबकि महात्मा गांधी तो भारतीय थे, उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कुछ रणनीति अपनायी

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

5. तो भारतीय समाज में उत्थान व विकास के लिए कुछ बातें कही। यह बातें तो भारतीय राष्ट्र व समाज के लिए कही गई किंतु उनके विचार तो वैश्विक प्रभावशीलता रखते हैं। इस तरह यह सवाल उठना लाजिमी है कि क्या बुद्धिमान व्यक्ति किसी एक राष्ट्र या समाज का नहीं अपितु समस्त दुनिया का नागरिक होता है।

अब यह समझना भी आवश्यक है कि ऐसी क्या प्रक्रिया है जो बुद्धिमान व्यक्ति को संपूर्ण विश्व का नागरिक बना देता है, वस्तुतः मानव सभ्यता के विकास के साथ ही समाज में संतुलन व विकास को बनाए रखने का प्रयास किया जाता रहा है कोई राष्ट्र या समाज नवीन व आवश्यक मानवीय मूल्यों को अपनाकर एक संतुलित सामाजिक वातावरण के निर्माण का प्रयास करता है।

शांति, प्रेम, सहिष्णुता, सद्भावना जैसे मूलभूत मानवीय मूल्य किसी काल, देश की सीमा से बंधे हुए नहीं होते हैं, यह तो संपूर्ण मानवता को आगे बढ़ने के लिए प्रेरक की भूमिका

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

में बने रहते हैं।

इसी तरह ऐसे विचार जो सभी मानव को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करे, शोषण को कम करने, मानव को मानव का दर्जा देने का आधार हो तो वह वैश्वीकृत विचार बन जाते हैं। यही कारण है कि हम ऐसे महान विचारकों की एक लंबी श्रृंखला देखते हैं जो अतीत से लेकर वर्तमान तक व भविष्य में हमारे बीच जीवंत रहेंगे। वह अपने विचारों से मानव को सभ्यतागत विकास को मजबूत करते रहेंगे।

अब कुछ उदाहरणों के माध्यम से हम वैश्विक नागरिक व वैश्विक विचारों को समझने का प्रयास करते हैं।

वस्तुतः महात्मा बुद्ध का जन्म कपिलवस्तु (नेपाल) में हुआ, उनको ज्ञान बोधगया (भारत) में मिला, जबकि उनके प्रतीत्यसमुत्पाद, अष्टांगिक मार्ग, आत्मदीपो भव की अवधारणा आज भी एक वैश्विक धर्म के रूप में विद्यमान है, वह एक वैश्वीकृत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

नागरिक बनकर हमारे बीच आज भी प्रेरक बने हुए हैं, वह मानव, समाज, राष्ट्र सभी के शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की अवधारणा से स्वस्थ वातावरण के निर्माण के लिए प्रेरित करते रहे हैं।

इसी तरह हम अशोक की धम्म नीति को देखें तो वह आज भी कल्याणकारी राज्य व अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में शांति निर्माण का आधार है, अकबर की सुलह-ए-कुल की नीति संपूर्ण विश्व में सांप्रदायिक तनावों को कम करने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

इसी क्रम में राजाराममोहन राय महिला अधिकारों व सामाजिक शोषण को कम करने के लिए एक मिसाल के तौर पर विद्यमान हैं, जबकि विवेकानंद ने पश्चिम को भारतीय आध्यात्म की महत्ता समझायी व भारत को पश्चिम की भौतिकता को अपनाने के लिए प्रेरित किया, उनके विचार संपूर्ण विश्व के युवाओं को निरंतर प्रयास के लिए प्रेरित करते रहते हैं

"उठो, जागो और तब तक प्रयास करते रहो जब तक तुम्हें तुम्हारा लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

6. अब हम कुछ वर्तमान विचारों के उदाहरणों को भी समझने का प्रयास करते हैं वस्तुतः सुकरात, प्लेटो, अरस्तु के विचार आज भी संपूर्ण विश्व के लिए प्रेरक के रूप में विद्यमान हैं

प्रबोधन के विचारों ने संपूर्ण विश्व में क्रांति ला दी, जहां स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व के नारों ने मानव अधिकारों व लोकतंत्र के विचारों को प्रसारित किया, रूसो का सामान्य इच्छा का सिद्धांत व जनता के राष्ट्र का सिद्धांत एक लोकतांत्रिक राज्यों के गठन का आधार बना।

"दुनिया के मजदूरों एक हो जाओ।
तुम्हारे पास पैरों की जंजीरों के सिवा खोने को और कुछ नहीं है," - मार्क्स

कार्ल मार्क्स के अतीत विचार संपूर्ण विश्व में शोषण से लड़ने व एक शोषणमुक्त समाज बनाने का आधार बने। भारत में भगत सिंह, नेहरू, सुभाष चन्द्र बोस

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

आगे ने एक समाजवादी राज्य के निर्माण की बात की जो मार्क्स के विचारों का भारतीयकरण दर्शाता है, मार्क्स के ही विचारों पर रूस की साम्यवादी क्रांति हुई।

इसी तरह न्यूटन, आइंस्टीन के भौतिकीय ज्ञान तत्कालीन व वर्तमान व भविष्य में राष्ट्र राज्य की सीमा से परे भौतिकी विकास व तकनीकी विकास का आधार बने रहेंगे।

भारतीय आर्यभट्ट के शून्य अविष्कार का प्रयोग ही ~~ज्यामितीय~~ गणितीय विकास का आधार बना, वस्तुतः अरबों से भारतीय ज्ञान-विज्ञान को प्राप्त कर ही यूरोप में प्रबोधन व पुनर्जागरण के विकास को बढ़ावा मिला।

कोपरनिकस, गैलिलियो के खगोल विज्ञान संबंधी खोजों ने पृथ्वी के सूर्य का चक्कर लगाने व अन्य भौगोलिक घटनाओं की जानकारी संपूर्ण विश्व को उपलब्ध कराई

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

वर्तमान सूचना प्रौद्योगिकी के युग में विचारों का प्रसार इस तरह हो रहा कि कौन कहां निवासरत है इसका प्रभाव ही नहीं पड़ता। अरब स्प्रिंग की शुरुआत ट्यूनीशिया से हुई किंतु यह संपूर्ण ~~प्रदेश में~~ अरब क्षेत्र में तानाशाही शासन को समाप्त करने का आधार बना।

इसी तरह अमेरिकी मी टू अभियान संपूर्ण विश्व में महिला शोषण के मुद्दे को उजागर करने का माध्यम बन गया। अमेरिका में अश्वेत जॉर्ज फ्लायड के विरुद्ध पुलिसीय कार्यवाही का विरोध संपूर्ण विश्व में हुआ।

फिर भी कुछ व्यक्ति व विचार संपूर्ण विश्व में तनाव व नकारात्मकता को भी प्रसारित करते हैं जहां आतंकवादी विचारधारा संपूर्ण विश्व व्यवस्था के समक्ष भस्मासुर के समान विद्यमान है जो मानवीय मूल्यों के पतन व तनाव को प्रसारित करता है

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

7\. मानव को अपनी व दूसरों की गलतियों से सीख लेकर आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। इस क्रम में वह उन विचारों को अपनाता है, उनकी सभ्यता व संस्कृति में व्याप्त समस्याओं को दूर कर नवीन व स्वस्थ संस्कृति के विकास को बढ़ावा दे, उसे निरंतर नवीन विचारों को अपनाकर सृजनात्मक क्षमता के विकास का प्रयास करना चाहिए, जो आगे चलकर हमें एक विकसित समाज व राष्ट्र ~~को~~ के सपने को पूरा कर सके।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation